वेदों के सम्बन्ध में

महर्षि दयानन्द सरस्वती

और

पाश्चात्य विद्वान

लेखक :

श्री शिव पूजनसिंह एम० ए०

महर्षि दयानन्द सरस्वती का दृष्टिकोण :

जो २ ग्रन्थ सृष्टि की आदि से लेके आज तक पक्षपात और राग द्वेष रहित सत्य धर्म युक्त, सब लोगों के प्रिय प्राचीन विद्वान् आर्य लोगों ने (स्वतः प्रमाण) अर्थात् अपने आप ही प्रमाण, (और) परतः प्रमाण, अर्थात् वेद और प्रत्यक्षानुमानादि से प्रमाण भूत हैं........उनको आगे कहते हैं।

"........ईश्वर की कही हुई जो चारों मन्त्र संहिता हैं, वे ही स्वयं प्रमाण होने योग्य हैं अन्य नहीं। परन्तु उससे भिन्न भी जो २ जीवों के रचे हुए ग्रन्थ हैं वे भी वेदों के अनुकूल होने से परतः प्रमाण के योग्य हैं।"

—ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका

वेद निर्भ्रम और स्वतः प्रमाण क्यों हैं ?

क्योंकि वेद ईश्वर के रचे हुए हैं और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद्या युक्त, तथा सर्वशक्ति वाला है, इस कारण से उसका कथन ही निर्भ्रम और प्रमाण के योग्य है, और जीवों के बनाये ग्रन्थ स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं होते क्योंकि वे (जीव) सर्व विद्या युक्त और सर्व शक्तिमान नहीं होते। इसलिए उनका कहना स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं हो सकता। ऊपर के कथन से यह बात सिद्ध होती है कि वेद विषय में जहाँ कहीं प्रमाण की आवश्यकता हो वहाँ सूर्य और दीपक के समान वेदों का ही प्रमाण लेना उचित है, अर्थात् जैसे सूर्य और दीपक अपने ही प्रकाश से प्रकाशमान होके सब क्रिया वाले द्रव्यों को प्रकाशित कर देते हैं, वैसे ही वेद भी अपने प्रकाश से प्रकाशित होके अन्य ग्रन्थों को भी प्रकाशित करते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि जो-जो ग्रन्थ वेदों से विरुद्ध हैं वे कभी प्रमाण वा स्वीकार करने के योग्य नहीं होते। और वेदों का (यदि) अन्य ग्रन्थों के साथ विरोध भी हो, तब भी अप्रमाण के योग्य नहीं ठहर सकते, क्योंकि वे तो अपने ही प्रमाण से प्रमाण युक्त हैं। इसी प्रकार ऐतरेय, शतपथ-ब्राह्मणादि ग्रन्थ जो वेदों के अर्थ और इतिहासादि से युक्त बनाये गये हैं, वे भी परतः प्रमाण अर्थात् वेदों के अनुकूल ही होने से प्रमाण कहे जाते हैं और उनके भिन्न ऐतरेय, शतपथ आदि प्राचीन सत्य ग्रन्थ हैं, ये परतः प्रमाण के योग्य हैं।"

—ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका

(२) "मैं उपनिषदों में एक "ईशावास्य" को छोड़ के अन्य उपनिषदों को वेद नहीं मानता, किन्तु अन्य सब उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थों में हैं, वे ईश्वरोक्त नहीं हैं।"

—भ्रमोच्छेदन

(३) "मैं ब्राह्मण पुस्तकों को भी वेद नहीं मानता" क्योंकि जो ईश्वरोक्त है, वही वेद होता है। जीवोक्त को वेद नहीं कहते। जितने ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, वे सब ऋषि मुनि-प्रणीत और संहिता ईश्वर प्रणीत हैं। जैसा ईश्वर के सर्वज्ञ होने से तदुक्त निर्भ्रान्त सत्य और मत के साथ स्वीकार करने योग्य होता है, जीवोक्त नहीं हो सकता क्योंकि वे (अर्थात्-जीव) सर्वज्ञ नहीं। परन्तु जो वेदानुकूल ब्राह्मण ग्रन्थ हैं, उनको मैं मानता और विरुद्धार्थों को नहीं मानता हूँ। वेद स्वतः प्रमाण और ब्राह्मण परतः प्रमाण हैं, इससे जैसे वेद विरुद्ध ब्राह्मण ग्रन्थों का त्याग होता है, वैसे ब्राह्मणों ग्रन्थों से विरुद्धार्थ होने पर भी वेदों का परित्याग कभी नहीं हो सकता, क्योंकि वेद सर्वथा सबको माननीय हैं।"

—भ्रमोच्छेदन

वेद किन का नाम है ?

जो ईश्वरोक्त सत्य विद्याओं से युक्त ऋक् संहितादि चार पुस्तक हैं, जिनसे मनुष्यों को सत्यसत्य का ज्ञान होता है, उनको वेद कहते हैं।

—आर्योद्देश्य रत्नमाला

सृष्टि के आदि में वेदों का ज्ञान किन्हें और कैसे दिया गया ?

"अग्नि, वायु, आदित्य, और अंगिरा, इन चारों मनुष्यों को, जैसे वादित्र को कोई बजावे वा काठ की पुतली को चेष्टा करावे, इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्त मान किया था।"

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

वेदों का श्रुति नाम क्यों है ?

"सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त और ब्रह्मादि से लेके हम लोग पर्यन्त जिससे सब सत्य विद्याओं को सुनते आते हैं, इससे वेदों का "श्रुति" नाम पड़ा है, क्योंकि किसी देहधारी ने वेदों के बनाने वाले को साक्षात् कभी नहीं देखा। इस कारण से जाना गया कि 'वेद' निराकार ईश्वर से ही उत्पन्न हुए और उनको सुनते-सुनाते ही आज पयन्त सब लोग चले आते हैं।"

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

वेद कब पुस्तक रूप में आये ?

पाठकगण ! वेदों का नाम "श्रुति" भी है, कारण यह कि आदि सृष्टि

से लेकर अनेक वर्षों पर्यन्त लोग "श्रवण" द्वारा ही इस ज्ञान को ग्रहण करते रहे, और उन लोगों की स्मृति इतनी तीव्र होती थी, कि सम्पूर्ण ज्ञान उन्हें सहज में याद हो जाता था। परन्तु एक समय ऐसा आया कि उनकी स्मृति धीरे-धीरे निर्बल होती गई और वेदों के ज्ञान को संभाल कर सुरक्षित न रख सके। तब ऋषियों ने वेदों को पुस्तक-रूप में परिणित कर दिया। महर्षि दयानन्द ने ता० २५ जुलाई सन् १८७१ ई० को पूना में "इतिहास" विषय पर एक व्याख्यान दिया। उस व्याख्यान में महर्षि ने अपना विचार इस प्रकार प्रकट किया—

"इस प्रकार के मनुष्यों में गुण-कर्मानुरूप व्यवस्था स्वायम्भुव मनु के समय तक पूर्णतया चलती रही। मनु के दस पुत्र थे। स्वायम्भुव मनु का बेटा मरीचि प्रथम क्षत्रिय राजा हुआ, इसके पश्चात् हिमालय के प्रदेश में छः क्षत्रिय राजाओं की परम्परा हुई, अनन्तर इक्ष्वाकु राजा राज्य करने लगा—......।

इक्ष्वाकु, आर्यावर्त का प्रथम राजा हुआ। इक्ष्वाकु की ब्रह्मा से छठी पीढ़ी है। पीढ़ी शब्द का अर्थ "बाप से बेटा" यही न समझें, किन्तु एक अधिकारी से अर्थ दूसरा अधिकारी, ऐसा जानें। पहिला अधिकारी स्वयम्भुव था। इक्ष्वाकु के समय में लोग अक्षर स्याही आदि लिखने की रीति को प्रचार में लाये, ऐसा प्रतीत होता है, क्योंकि इक्ष्वाकु के समय में वेद को बिल्कुल कण्ठस्थ करने की रीति कुछ-कुछ बन्द होने लगी (थी) जिस लिपि में वेद लिखे जाते थे, उसका नाम "देवनागरी" ऐसा है। कारण (यह कि) देव अर्थात् विद्वान् (इनका जो नगर, ऐसे विद्वान्) नागर लोगों ने अक्षर द्वारा अर्थ संकेत उत्पन्न करके ग्रन्थ लिखने का प्रचार प्रथम प्रारम्भ किया।" —**पूना का व्याख्यान**

वेदों का ज्ञान नित्य है

(१) जैसे इस कल्प की सृष्टि में शब्द, अक्षर, अर्थ और सम्बन्ध वेदों में हैं, इस प्रकार से पूर्व कल्प में थे और आगे भी होंगे, क्योंकि ईश्वर की जो विद्या है, सो नित्य एक ही रस बनी रहती है, उनके एक अक्षर का भी विपरीत भाव कभी नहीं होता। सो ऋग्वेद से लेके चारों वेदों की संहिता अब जिस प्रकार की हैं कि इन में शब्द, अर्थ, सम्बन्ध, पद और अक्षरों का जिस क्रम से वर्त्तमान है इसी प्रकार का क्रम सब दिन बना रहता है, क्योंकि ईश्वर का ज्ञान नित्य है, उसकी वृद्धि, क्षय, और विपरीतता कभी नहीं होती, इस कारण से वेदों को नित्य स्वरूप ही मानना चाहिए।"

—**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**

(२) "जब-जब परमेश्वर सृष्टि को रचता है, तब-तब प्रजा के हित के लिए सृष्टि के आदि में सब विद्याओं से युक्त वेदों का भी उपदेश करता है, और जब-जब सृष्टि का प्रलय होता है, तब-तब वेद उसके ज्ञान में सदा बने रहते हैं, इससे उनको सदैव नित्य मानना चाहिए।"

(३) "जो ईश्वर नित्य और सर्वज्ञ है उसके किए वेद भी नित्य और सर्वज्ञ होने के योग्य है।"

क्या वेदों में इतिहास है ?

"ब्राह्मण पुस्तकों में बहुत से ऋषि-महर्षि और राजादि के इतिहास लिखे हैं, और इतिहास जिसका हो, उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। वह ग्रन्थ भी उसके जन्म के पश्चात् होता है। वेदों में किसी का इतिहास नहीं किन्तु विशेष जिस-जिस शब्द से विद्या का बोध होवे, उस-उस शब्द का प्रयोग किया है, किसी मनुष्य की संज्ञा वा विशेष कथा का प्रसंग वेदों में नहीं।"

—सत्यार्थप्रकाश समु० ७

प्रत्येक मन्त्र के साथ ऋषि किस लिए लिखा होता है?

"ईश्वर जिस समय आदि सृष्टि में वेदों का प्रकाश कर चुका, तभी से प्राचीन ऋषि लोग वेद मंत्रों के अर्थों का प्रचार करने लगे, फिर उनमें से जिस-जिस मन्त्र का अर्थ जिस-जिस ऋषि ने प्रकाशित किया, उस-उस का नाम उसी-उसी मन्त्र के साथ स्मरण के लिए लिखा गया है, इसी कारण से उनका ऋषि नाम भी हुआ है और जो उन्होंने ईश्वर के ध्यान और अनुग्रह से बड़े-बड़े प्रयत्न के साथ वेद मन्त्रों के अर्थों को यथावत् जानकर सब मनुष्यों के लिए पूर्ण उपकार किया है, इसलिए विद्वान् लोग वेद मन्त्रों के साथ उनका स्मरण रखते हैं।" —ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

"जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहिले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, किया और दूसरों को पढ़ाया भी, इसलिए अद्यावधि उस-उस मन्त्र के साथ ऋषि का नाम स्मरणार्थ लिखा आता है, जो कोई ऋषियों को मन्त्र कर्त्ता बतलावे, उनको मिथ्यावादी समझें, वे तो मन्त्रों के अर्थ प्रकाशक हैं।"

—सत्यार्थप्रकाश समु० ७

ऋषि लोगों को वेदों के अर्थ किसने और कैसे बताए ?

"परमेश्वर ने जनाया और धर्मात्मा योगी महर्षि लोग जब-जब जिस-जिस के अर्थ जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो (कर) परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए, तब-तव परमात्मा ने सभी इष्ट मन्त्रों के अर्थ जताये। जब बहुतों के आत्माओं में वेदार्थ प्रकाश हुआ, तब ऋषि मुनियों ने इतिहास पूर्वक ग्रन्थ बनाये, उनका नाम "ब्राह्मण" अर्थात् ब्रह्म जो वेद (है) उसका व्याख्यान ग्रन्थ होने से ब्राह्मण नाम हुआ।" —स० प्र० स० ७

ऋषियों ने वेद मन्त्रों का प्रकाश क्यों किया ?

"वेद प्रचार की परम्परा स्थिर रहने के लिए तथा जो लोग वेद शास्त्रादि पढ़ने को कम समथ हैं वे जिससे सुगमता से वेदार्थ ज्ञान लेवें, इसलिए निघण्टु और निरुक्त आदि ग्रन्थ भी बना दिये हैं कि जिनके सहाय से सब मनुष्य वेद और वेदांगों को ज्ञानपूर्वक पढ़कर उनके सत्य अर्थों का प्रकाश करें।"

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

मन्त्रों का देवता क्या होता है ?

"जिन-जिन मन्त्रों में जिन-जिन पदार्थों की प्रधानता से स्तुति की है, मन्त्रमय देवता जानने चाहिएं, अर्थात् जिस-जिस मन्त्र का जो अर्थ होता है, वही उसका "देवता" कहा है, सो यह इसलिए है कि जिससे मन्त्रों को देख के उनके अभिप्रायार्थ का यथार्थ ज्ञान हो जाये, इत्यादि प्रयोजन के लिए देवता शब्द को साथ में लिखा जाता है।" —ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

वेद मंत्रों के स्वरों का ज्ञान और उच्चारण किस प्रकार होता है ?

"ऐसे ही व्याकरणादि शास्त्रों के बोध से उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, एक श्रुति, आदि स्वरों का ज्ञान और उच्चारण, तथा पिगंल सूत्र से छंदों और षड्जादि स्वरों का ज्ञान अवश्य करना चाहिए, जैसे "अग्निमीडे० यहाँ अकार के नीचे अनुदात्त का चिह्न (ग्नि)उदात्त है, इसलिए उस पर चिह्न नहीं लगाया गया है, (मी) के ऊपर स्वरित का चिह्न है, (डे) प्रचय और एकश्रुति स्वर है, यह वात ध्यान में रखना।" —ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

एक वेद क्यों नहीं ?

(१) "(इसके दो हेतु हैं, एक तो यह है कि) भिन्न-भिन्न विद्या जानने के लिए, अर्थात् जो तीन प्रकार की गान विद्या है (उसके जानने के लिए वेदों का विभाग किया गया है),एक तो यह कि उदात्त षड्जादि स्वरों का उच्चारण द्रुत, अर्थात् शीघ्रवृत्ति में होता है, दूसरी मध्यम वृत्ति जैसा कि यजुर्वेद के स्वरों का उच्चारण ऋग्वेद के मन्त्रों से दूने काल में होता है, तीसरी विलम्बित वृत्ति है, जिसमें प्रथम वृत्ति से तिगुना काल लगता है, जैसा कि सामवेद के स्वरों के उच्चारण व गान में, फिर इन्हीं तीनों वृत्तियों के मिलाने से अथर्ववेद का भी उच्चारण होता है, परन्तु इसका द्रुतवृत्ति में उच्चारण अधिक होता है इसलिए वेदों के चार विभाग हुए हैं।"

—**ऋग्वेदभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय**

(२) दूसरा हेतु यह है कि :—

"ऋग्वेद में सब पदार्थों के गुणों का प्रकाश किया है, जिससे उनमें प्रीति बढ़कर उपकार लेने का ज्ञान प्राप्त हो सके, क्योंकि बिना प्रत्यक्ष ज्ञान के संस्कार और प्रवृत्ति का आरम्भ नहीं हो सकता और आरम्भ के बिना यह मनुष्य जन्म व्यर्थ ही चला जाता है, इसलिए ऋग्वेद की गणना प्रथम ही की है। तथा यजुर्वेद में क्रिया काण्ड का विधान लिखा हैं, सो ज्ञान के पश्चात् ही कर्त्ता की प्रवृत्ति यथावत् हो सकती है, क्योंकि जैसा ऋग्वेद में गुणों का कथन किया है, वैसा ही यजुर्वेद में अनेक विद्याओं के ठीक-ठीक विचार करने से संसार में व्यवहारी पदार्थों से उपयोग सिद्ध करना होता है, जिनसे लोगों को नाना प्रकार का सुख मिले। क्योंकि जब तक कोई क्रिया विधिपूर्वक नहीं की जाये, तब तक उसका अच्छी प्रकार भेद नहीं खुल सकता इसलिए जैसा कुछ जानना व कहना, वैसा ही करना भी चाहिए, तभी ज्ञान का फल और ज्ञान की शोभा होती है। तथा यह भी जानना आवश्यक है कि जगत् का उपकार मुख्य करके दो ही प्रकार का होता है, एक आत्मा का और दूसरा शरीर का, अर्थात् विद्यादान से आत्मा और श्रेष्ठ नियमों से उत्तम पदार्थों की प्राप्ति करके शरीर का उपकार होता है, इसलिए ईश्वर ने ऋग्वेदादि का उपदेश किया है कि जिनसे मनुष्य लोग ज्ञान और क्रिया काण्ड को पूर्ण रीति से जान लेवें।"

"तथा सामवेद से ज्ञान और आनन्द की उन्नति और अथर्ववेद से सर्व संशयों की निवृत्ति होती है, इसलिए चार विभाग किये हैं।"

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय

पहिला ऋक्, फिर यजुः, फिर साम, और फिर अथर्व इस प्रकार से चार वेद क्यों गिने जाते हैं ?

"जब तक गुण और गुणी का ज्ञान मनुष्यों को नहीं होता, तब पर्यन्त उनमें प्रीति से प्रवृत्ति नहीं हो सकती और इसके बिना शुद्ध क्रियादि के अभाव से मनुष्यों को सुख भी नहीं हो सकता था इसलिए वेदों के चार विभाग किए हैं कि जिससे प्रवृत्ति हो सके। क्योंकि जैसे इस गुण-ज्ञान विद्या को जानने से पहिले ऋग्वेद की गणना योग्य है, वैसे ही पदार्थों के गुण-ज्ञान के अनन्तर क्रिया रूप उपकार करके सब जगत् का अच्छी प्रकार से हित सिद्ध हो सके। इस विद्या के जानने के लिए यजुर्वेद की गिनती दूसरी बार की है। ऐसे ही ज्ञान, कर्म और उपासना काण्ड की वृद्धि वा फल कितना और कहाँ तक होना चाहिए, इसका विधान सामवेद में लिखा है, इसलिए उसको तीसरा गिना है। ऐसे ही तीन वेदों में जो-जो विद्या है, उन सबके शेष भाग की पूर्ति, विधान सब विद्याओं की रक्षा और संशय निवृति के लिए अथर्ववेद को चौथा गिना है। सो गुण-ज्ञान क्रिया-विज्ञान, इनकी उन्नति तथा रक्षा को पूर्वापर क्रम से जान लेना ? अर्थात् ज्ञान-काण्ड के लिए ऋग्वेद, क्रियाकाण्ड के लिए यजुर्वेद, इनकी उन्नति के लिए सामवेद और शेष अन्य शिक्षाओं के प्रकाश करने के लिए अथर्ववेद की, प्रथम, दूसरी, तीसरी और चौथी करके संख्या बाँधी है। क्योंकि (ऋच स्तुतौ) (यज्, देवपूजा, संगतिकरणदानेषु) (षोन्तकर्मणि) और (साम सान्व प्रयोगे) (अथर्वतिश्चरतिकर्मा) इन अर्थों के विद्यमान होने से चार वेदों अर्थात् ऋग, यजु, साम और अथर्व की यह चार संज्ञा रखी हैं। तथा अथर्ववेद का प्रकाश ईश्वर ने इसलिए किया है कि जिससे तीनों वेदों की अनेक विद्याओं से सब विघ्नों का निवारण और उनकी गणना अच्छी प्रकार से हो सके।" —ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय

वेदों में जो अष्टक, अध्याय, मण्डल, सूक्त, षट्क, काण्ड वर्ग दशक, त्रिक और अनुवाक् रखे हैं, यह किस लिए ?

"इनका विधान इसलिए है कि जिससे पठन-पाठन और मन्त्रों की गिनती

विना कठिनता से जान ली जाय, तथा सब विद्याओं के पृथक्-पृथक् प्रकरण निर्भ्रमता के साथ विदित होकर सब विद्या-व्यवहारों में गुण और गुणी के ज्ञान द्वारा मनन और पूर्वापर स्मरण होने से अनुवृत्तिपूर्वक आकांक्षा योग्यता, आसत्ति और तात्पर्य सबको विदित हो सके, इत्यादि प्रयोजन के लिए अष्टकादि किए हैं।"

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय

मन्त्रों के साथ छन्द क्यों लिखा होता है ?

"जिस-जिस मन्त्र का जो-जो छन्द है, सो भी उसके साथ इसलिए लिख दिया गया है कि उनसे मनुष्यों को छन्दों का ज्ञान भी यथावत् होता रहे। तथा कौन-सा छन्द किस-किस स्वर में गाना चाहिए, इस बात को जनाने के लिए उनके साथ में षड्जादि स्वर लिखे जाते हैं, जैसे गायत्री छन्द वाले मन्त्रों को षड्ज स्वर में गाना चाहिए। ऐसे ही और-और भी बता दिए हैं कि जिससे मनुष्य लोग गान विद्या में भी प्रवीण हों, इसलिए वेद में प्रत्येक मन्त्रों के साथ उनके षड्ज आदि स्वर लिखे जाते हैं।"

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय

भला कई-कई मन्त्र चारों वेदों में क्यों आते हैं ?

"कहीं-कहीं एक मन्त्र का चार वेदों में पाठ करने का यही प्रयोजन है कि वह पूर्वोक्त चारों प्रकार की गान विद्या में गाया जावे। एक कारण तो यह है और दूसरा कारण यह भी है कि प्रकरण भेद से कुछ-कुछ अर्थभेद भी होता है, इसलिए कितने ही मन्त्रों का पाठ चारों वेदों में किया जाता है।"

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय

वेदों के मन्त्र कितने प्रकार के अर्थों को जनाते हैं ?

"वेदों के सब मन्त्र तीन प्रकार के अर्थों को कहते हैं। कोई परोक्ष, अर्थात् अदृश्य अर्थों को, कोई प्रत्यक्ष अर्थात् दृश्य अर्थों को और कोई अध्यात्म अर्थात् ज्ञान गोचर आत्मा और परमात्मा को। उन में से परोक्ष अर्थ के कहने वाले मन्त्रों में प्रथम पुरुष अर्थात् अपने और दूसरे के कहने वाले 'जो' सो और वह" आदि शब्द हैं तथा उनकी क्रियाओं के अस्ति, भवति, करोति, पचतीत्यादि प्रयोग हैं। एवं प्रत्यक्ष अर्थ के कहने वाले मध्यम पुरुष, अर्थात् तू तुम आदि शब्द और उनकी क्रिया के असि, भवसि, करोषि पचसीत्यादि प्रयोग

हैं। तथा अध्यात्म अर्थ के कहने वाले मन्त्रों में उत्तम पुरुष अर्थात् 'मैं, हम" आदि शब्द और उनकी अस्मि, भवामि,करोमि, पचामीत्यादि क्रिया आती हैं। तथा जहां स्तुति करने के योग्य परोक्ष, और स्तुति करने वाले प्रत्यक्ष हों, वहां भी मनुष्य पुरुष का प्रयोग होता है। यहां यह अभिप्राय समझना चाहिए कि व्याकरण की रीति से प्रथम, मध्यम, और उत्तम अपनी २ जगह होते हैं, अर्थात् जड़ पदार्थों में प्रथम, चेतन में मध्यम वा उत्तम होते हैं, सो यह तो लोक और वेद के शब्दों में साधारण नियम है। परन्तु वेद के प्रयोगों में इतनी विशेषता होती है कि जड़ पदार्थ भी प्रत्यक्ष हों तो वहां निरुक्तकार के उक्त नियम से मध्यम पुरुष का प्रयोग होता है और इससे यह भी जानना आवश्यक है कि ईश्वर ने संसारी जड़ पदार्थों को प्रत्यक्ष कराके केवल उनसे अनेक उपकार लेना जनाया है, दूसरा प्रयोजन नहीं है। परन्तु इस नियम को नहीं जान कर सायणाचार्य आदि वेदों के भाष्यकारों तथा उन्हीं के बनाये हुए भाष्यों के अवलम्ब से यूरोप देशबासी विद्वानों ने भी जो वेदों के अर्थों को अन्यथा कर दिया है, सो यह उनकी भूल है और इसीसे वे ऐसा लिखते हैं कि वेदों में जड़ पदार्थों की पूजा पाई जाती है, जिस का कि कहीं चिह्न भी नहीं है।"

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय

वेदार्थ करने में विशेष नियम कौन-से हैं!

"वेदादि शास्त्रों में जो-जो शब्द पढ़े जाते हैं, उन सब के बीच में यह नियम है कि जिस विभक्ति के साथ वे शब्द पड़े हों, उसी विभक्ति से अर्थ कर लेना, यह बात नहीं है, किन्तु जिस विभक्ति से शास्त्र मूल युक्ति और प्रमाण के अनुकूल अर्थ बनता हो, उस विभक्ति का आश्रय करके अर्थ करना चाहिए क्योंकि वेदादि शास्त्रों में शब्दों के प्रयोग इसलिए होते हैं कि उनके अर्थों को ठीक २ जान उनसे लाभ उठावें।

"वेदों में षष्ठी विभक्ति के स्थान में चतुर्थी हो जाती है लौकिक ग्रन्थों में नहीं। —ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय

वेदार्थ करने में विशेष नियम क्यों हैं!

"यह सब ऋषियों का प्रबन्ध इसलिए है कि शब्द सागर अथाह है। इसकी थाह व्याकरण से नहीं मिल सकती। जो कहे कि ऐसा व्याकरण क्यों नहीं बनाया कि जिससे शब्द सागर के पार पहुंच जाते, तो यह समझना

कि कितने ही पोथा बनाते और जन्म जन्मान्तरों भर पढ़ते तो भी पार होना दुर्लभ हो जाता, इसलिए यह सब पूर्वोक्त प्रबन्ध ऋषियों ने किया है, जिससे शब्दों की व्यवस्था मालूम हो जाये।

—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, प्रश्नोत्तर विषय

क्या वेदमन्त्रों के अनेक अर्थ हो सकते हैं !

"इस आर्याभिविनय" ग्रन्थ में मुख्यतया वेद मन्त्रों का परमेश्वर सम्बन्धी एक ही अर्थ संक्षेप से किया गया है, दोनों अर्थ करने से ग्रन्थ बढ़ जाता इससे व्यवहार विद्या सम्बन्धी अर्थ नहीं किया गया, परन्तु वेद के भाष्य में यथावत् विस्तार पूर्वक परमार्थ और व्यवहारार्थ, यह दोनों अर्थ सप्रमाण किये जायेंगे ....और वेदों का महत्व तथा वेदों का अनन्तार्थ जानने से मनुष्यों को महालाभ और वेदों में यथावत् प्रीति होगी।" —आर्याभिविनय भूमिका

वेद संस्कृत भाषा में क्यों प्रकाशित किये गये !

"जो किसी देश भाषा में प्रकाशित करता, तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता क्योंकि जिस देश की भाषा में प्रकाशित करता, उनको सुगमता और बिदेशियों को कठिनता वेदों के पढ़ने-पढ़ाने की होती। इसलिए संस्कृत ही में प्रकाश किया, जो किसी देश की भाषा नहीं और वेद भाषा अन्य सब भाषाओं का कारण है, उसी में वेदों का प्रकाश किया।" सत्यार्थप्रकाश

पाश्चात्य विद्वानों का दृष्टिकोण

आस्तिकों का सिद्धान्त है कि 'वेद' ईश्वरकृत हैं। आचार्य सायण, स्वामी शंकराचार्य ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान माना है। वेदार्थ क्रांत-दर्शी सुप्रसिद्ध सुधारक महर्षि दयानन्द जी ने भी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थों 'सत्यार्थ प्रकाश,' 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में वेदों को ईश्वरीय ज्ञान लिखा है। प्रस्तुत निबन्ध में मुझे यह प्रदर्शित करना है कि ऋषियों के सदृश कतिपय पाश्चात्य विद्वानों ने भी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान माना है। यथा—जैकोलियट जैसा उच्चकोटि का पाश्चात्य विद्वान् अपने "Bible in India" (बाइबिल इन इण्डिया) नामक ग्रन्थ में वेद प्रतिपादित सृष्टि उत्पत्ति के विषय की अन्य मतों के मूल ग्रन्थों से तुलना करते हुये लिखता है—"Astonishing fact the Hindu revelation (Vedas) is of all revela-

tions the only one whose ideas are in perfect harmony with Science as it proclaims the slow and gradual foundation of the world".[1]

अर्थात्—बड़े आश्चर्य की बात है कि ईश्वरीय ज्ञान समझे जाने वाले ग्रन्थों में से केवल वेद ही है जिसके सिद्धान्त विज्ञान के सर्वथा अनुकूल हैं।"

डा० जेम्स कज्जिन डी० लिट् यूरोप के प्रसिद्ध विचारक अपने "Path to Peace" में लिखते हैं—"On the Vedic Ideal alone ..... it is possible to rear a new earth in the image likeness of the eternal heavens." अर्थात्—"वैदिक आदर्शों पर चलने से ही संसार फिर स्वर्ग वा सुरधाम बन सकता है।"[2]

'नोबल प्राइज' विजेता मैटरलिङ्क (Materlink) जो कि बड़ा भारी दार्शनिक माना गया है, लिखता है :—"Only the glare of the clairvoyant directed upon the mysteries of the past, may reveal unrivalled wisdom which lies hidden behind those writings (Vedas)."[3]

अर्थात्—"वेद ही एकमात्र ज्ञान के भण्डार हैं जिनकी तुलना हो ही नहीं सकती, वेदों में गुप्त रूप से अर्थात् मन्त्र रूप से समस्त विद्याओं का उपदेश निहित है।"

अमेरिका के विश्रुत विचारक मिस्टर थौरी निरन्तर वेदों के स्वध्याय के पश्चात् इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि—"What extracts from the Vedas I have read, fall on me like the light of a higher and purer luminary which describes a loftier course through a purer stratum free from

---

1—"The Glory of the Vedas" by Pt. Dharma Deva 'Vidya Vachaspati', pp. 13-14

2—Ibid pp. 7.

3—Ibid, pp. 6; "The Great Secret"; "महान् भारत" प्रथम संस्करण, पृष्ठ २४४-२४५; साप्ताहिक पत्र "दिवाकर" का "वेदाङ्क" भाग १, दि० २६-१०. १९३५ ई०, अंक २८, २९ पृष्ठ १८४।

particulars simple, universal; the Vedas contain a sensible account Of God."[4]

अर्थात्—"वेदों की विचारधारा पवित्रतम है। वेदों में प्रकाश, ज्ञान और विज्ञान है। वेद सार्वजनिक, सार्वकालिक और सार्वदेशिक हैं। वेदों में परमात्मा का पवित्रतम प्रकाश प्रसारित है।"

प्रो० ब्लूमफील्ड ऋषियों को अपना पूर्व पुरुष बतलाते हुए स्वीकार करते हैं कि—"वेद प्राचीनतम हैं·········इतनी शताब्दियों के पश्चात् हमारे भाव, भाषा और धर्म में परिवर्तन होने के बाद भी आज वेदों में हमारे लिए बहुत कुछ मौजूद है।"[5]

लार्ड मार्ले का विश्वास है—"जो कुछ वेदों में है,अन्यत्र कहीं नहीं मिलता।"[6]

मि० मौरिस फिलिप (Rev. Morris Philip) अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Teachings of the Vedas" में लिखते हैं:—

"After the latest researches into the history and chronology of books of old testament, we may safely now call the Rigveda as the oldest book not only of the Aryan humanity, but of the whole world. The conclusion therefore, is inevitable, that in the development of religi us thought India has been uniformly downward and not onward-deterioration and not evolution. We are justified, therefore in concluding that higher and purer conceptions of the Vedic Aryans were the results of a primitive divine revelation."[7]

4—"The Glory of the Vedas" pp. 7,8; तथा "दिवाकर" का "वेदांक" पृष्ठ १८४।

५—"Religion of the Vedas" "महान् भारत" प्रथम संस्करण पृष्ठ २४२।

६—"महान् भारत' प्रथम संस्करण, पृष्ठ २४२।

७—वही पृष्ठ २४२-२४३; "The Glory of the Vedas". pp. 5; 'दिवाकर' का "वेदांक" पृष्ट १८४, पं. यशःपाल 'सिद्धांतालंकार' कृत "वैदिक सिद्धान्त दर्पण" प्रथम संस्करण, पृष्ठ ३९।

अर्थात्—"वेद भारत की ही नहीं अपितु समस्त संसार की सबसे प्रचीन सनातन धर्म पुस्तक है। संसार की सभ्यता का आदिम स्रोत वेद है, क्योंकि वेद ईश्वरीय है। वेद अपौरुषेय है।"

अमेरिन महिला व्हीलर विलकाक्स (Mrs. Wheeler Wilcox) कहती है कि—"We have all heard and read about the ancient religion of India. It is the land of the great Vedas the most remarkable works containing not only religious ideas for a perfect life, but also facts which all the science has since proved true."[8]

अर्थात्—"भारत के प्राचीन धर्म के विषय में हमने सुना व अध्ययन किया है। यह महान् वेदों की भूमि है, वेदों में केवल जीवन सम्बन्धी धार्मिक विचार ही नहीं, प्रत्युत वे वास्तविकताएं हैं जिन्हें समस्त विद्वानों द्वारा सत्य होने का प्रमाण मिला है।"

कील-बिश्वबिद्यालय के विद्वान् प्राध्यापक 'कील' महोदय वेदों की महिमा के गीत गाते हुए मुक्तकण्ठ से स्वीकार करते हैं कि-"वेद समग्र ज्ञानका आदि और अन्त है।"[9]

प्रो० बिल्सन (Wilson) ने ऋग्वेद के अनुवाद द्वारा यह सिद्ध कर दिया है कि—"सूत्र और ब्राह्मण काल से भी पूर्व वेदों में कला, विज्ञान आभूषण, कवच, अस्त्र-शस्त्र, ओषधियाँ और उनके प्रतिकार ऐन्टीडोट (Antidotes) समय विभाग, न्याय-नियम आदि सभी बातें पाई जाती हैं।"[10]

वेदज्ञ प्रो० मैक्समूलर लिखते हैं :—"किसी भी भाषा के ग्रन्थ ने जो काम नहीं किया वह वेदों ने संसार के इतिहास में किया है। जिन्हें अपने और

८—"The Sublimity of the Vedas" 'महान् भारत' पृष्ठ २४४।
"The Glory of the Vedas" pp. 14

9—"The Pre historic Antiquity of Aryan's"; "महान् भारत" पृष्ठ २४४।

१०–Rigveda (Translation) XV; "महान् भारत" पृष्ठ २४५।

पूर्वजों का अभिमान है, जिन्हें बौद्धिक विकास की इच्छा है, उन सबको वेदों का अभ्यास करना नितान्त आवश्यक है।"[11] पुन :—"वेद अपौरुषेय और नित्य है।"●

श्रमती बलावेटस्कीं का दृढ़ विश्वास है कि—"वास्तव में वेद ईश्वरीय ज्ञान है।"[12]

टिनावली के बिशप (Bishop) डाक्टर काडंबर्थ मानते हैं—"हम ऐसे विचारों को ईश्वरीय ज्ञान मानने में जरा भी आनाकानी नहीं करने।"[13]

सुप्रसिद्ध पाश्चात्य गवेषक अल्फ्रेड रसेल वैलेस (Dr. Alfred Russell Wallace) जिन्होंने विकासवाद (Evolution Theory) के सिद्धान्त को बढ़ाया है, अपनी पुस्तक "Social Environment and Moral Progress" में लिखते हैं कि–The wonderful collection of hymns known as the vedas is a vast system of religious teachings as pure and lofty as those of the finest portions of the Hebrew scriptures. Its authors were fully our equals in their conception of the universe and the deity expressed in the finest poetic language. In it we find many of the most advanced religious thinkers, we must admit that the mind which conceived and expressed in approximate language such ideas as are everywhere present in those Vedic hymns, could not have been inferior to those of the best of our religious teachers and poets, to our Milton. Shakespeare and Tennyson."[14]

---

११. "History of Sanskrit Literature" "महान् भारत" पृ० २४६

● "Chips from a German Workshop" Vol. I

१२. "Secret Doctrine"; 'महान् भारत' पृष्ठ २४५।

१३. 'महान भारत' पृ० २४५।

१४. "The Glory of the Vedas" pp. 4; 'दिवाकर' का "वेदांक" पृष्ठ १८३ तुलना करो, "पं० यश:पालजी सिद्धान्तालंकार कृत "वैदिक सिद्धान्त दर्पण" प्रथम संस्करण, पृष्ठ ३७।"

अर्थात्—"स्रोतों का अपूर्व संकलन जो वेदों के नाम से ज्ञात है, एक विशाल धार्मिक शिक्षाओं की प्रणाली है और ऐसा पवित्र और उच्च है जैसा कि यहूदी भाषा के धर्मग्रन्थ (बाइवल) के उत्तमोत्तम अंश हैं। इसकी भाषा बड़ी कवितामय व ओजस्वी है। इसमें हम लोग बड़े-बड़े दिग्गज विचारकों की शिक्षाओं से भी बढ़कर शिक्षा पाते हैं। हमारे सर्वोत्तम शिक्षकों व कवियों मिल्टन, शेक्सपीयर और टेनीसन के विचारों से वैदिक स्रोत सर्वोत्तम है।"

श्री डब्ल्यू० डी० ब्राउन (W. D. Brown) कहते हैं—"It recognises but one God. It is thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand. Here theology is based upon science and philosophy".[15]

वैदिक धर्म एक ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करता है। यह सम्पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है जिसमें धर्म और विज्ञान हाथ मिलाकर चलते हैं। इसके सिद्धान्त विज्ञान-तत्वज्ञान पर आश्रित हैं।"

हण्टर महोदय (W. W. Hunter) कहते हैं कि—"The age of this venerable hymnal (Rigveda) is unknown."[16] अर्थात्—"इस पूजनीय ऋग्वेद की आयु अज्ञेय अपरिमित है।"

कैगी साहब (Kaegi) लिखते हैं—"These productions at the time of compilation, even then partially unintelligible were looked upon as ancient, divinely inspired wisdom, and therefore, protected against all human criticism."[17]

---

१५. "The Superiority of the Vedic Religion". "The Glory of the Vedas pp. 13.

१६. पं० शिवशर्मा जी कृत "धर्मशिक्षा" चतुर्थ भाग, प्रथम संस्करण, पृष्ठ ३६; "महान् भारत" पृष्ठ २४२।

१७. "Kaegi's Rigveda" pp. 25 मासिकपत्र "क्षात्रधर्म सन्देश" जयपुर वर्ष ३, फरवरी १९४४ ई०, अंक २ पृष्ठ १३।

अर्थात्—"उक्त मन्त्र अपने संग्रहकाल में भी जिनके कुछ अंश लोगों की समझ में नहीं आते थे—प्राचीन और ईश्वरीय ज्ञान समझे जाते और इसी प्रकार सर्व प्रकार के मानव आक्षेपों से उनकी रक्षा की जाती थी।

विशप हीरों (Bishop Heron) लिखते हैं—"They (the Vedas) are without doubt the oldest works composed in Sanskrit. Even the most ancient Sanskrit writings allude to the Vedas as already existing. The Vedas alone stand serving as beacon of divine light for the onward march of humanity. There is no movement of Greece or Rome more precious than the Ṛigveda which is the most sublime conception of the great highways of humanity."[18]

अर्थात्—"निःसन्देह संस्कृत में जितने ग्रन्थ लिखे गये उनमें वेद सबसे प्राचीन काव्य है। अधिकांश प्राचीन संस्कृत लेख वेदों को पहले से वर्त्तमान होने का संकेत करते हैं। वेदों में मानवता के लिये शुद्ध प्रकाश है। ऋग्वेद की अपेक्षा अधिक बहुमूल्य, ग्रीस या रोम में कोई आन्दोलन नहीं है, जो कि मातवता के महान् मार्ग के लिए अधिक उच्च विचार हैं।"

पश्चिम का प्रसिद्ध सन्त एडवर्ड कारपेण्टर (Edward Carpenter) अपनी पुस्तक "Art of Creation" में लिखते हैं—"A new philosophy we can hardly expect or wish for, since the same germinal thoughts of the Vedic authors have come all the way down history, even to Schopenhaur and Whitman, inspiring philosophy after philosophy, religion after religion."[19]

---

१८. "Hindu Superiority." The Glory of the Vedas" pp. 5 'दिवाकर' का 'वेदांक' पृष्ठ १८३।

१९. "The Glory of the Vedas" pp. 6; 'दिवाकर' का "वेदांक" पृष्ठ १८४; "वैदिक सिद्धान्त दर्पण" पृष्ठ ३७, ३८ तथा "महान् भारत" पृष्ठ २४३।

अर्थात्—"आज तक एक भी नया विचार संसार में नहीं आया जो वदों में न प्राप्य हो। चाहे शोपनहार का दर्शन शास्त्र पढ़ जाओ और चाहे ह्विटमैन के धर्मोपदेश वेदों के ही विचार सर्वत्र मिलते हैं। वेद ही सनातन है। आज तक का इतिहास इस बात का साक्षी है कि वेदों से बढ़कर ज्ञान, विज्ञान और ज्ञान प्रतिपादक कोई ईश्वरीय ग्रन्थ नहीं है।"

मि० बी० जी० रेली लिखते हैं—"The Upanishads being the end of the Vedas we might also enquire whether these latter also are really mystical books divinely inspired, or books on the scientific subjects of morphology and physiology part.[20]

अर्थात्—"चूँकि उपनिषद् वेदों का अन्त है अतः यह बात भी समीक्षणीय है कि वेद वास्तव में ईश्वर प्रदत्त रहस्यमय ग्रन्थ हैं अथवा वह शरीर रंग रूप शास्त्र व्यापार शास्त्र जैसे वैज्ञानिक विषयों पर लिखे गये ग्रन्थ है।"

इस प्रकार इन प्रमाणों के आधार पर यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के विचारों का प्रभाव इन उपर्युक्त पाश्चात्य विद्वानों पर अवश्य पड़ा है।

२०. "Vedic Gods" की भूमिका (सन् १९३१ में मुद्रित) तथा मासिकपत्र "क्षात्रधर्म सन्देश" जयपुर, वर्ष ३, मार्च+अप्रैल १९४४ ई०, अंक ३४, पृष्ठ ५।